==========

AVYAKT MURLI

22 / 07 / 77

==========

02-02-77 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

सदा अलंकारी स्वरूप में स्थित रहने वाला ही स्वयं का तथा बाप का साक्षात्कार करा सकता है

सदा अलंकारी, निरहंकारी, निराकारी स्थिति में स्थित, विश्व को रोशन करने वाले दीपकों के प्रति बाबा बोले-

बापदादा स्नेही बच्चों के रूहानी स्नेह की महफिल में आए हैं। ऐसे रूहानी स्नेह की महफिल कल्प में अब संगम पर ही होती है। और किसी भी युग में रूहानी बाप और बच्चों के स्नेह की महफिल नहीं हो सकती है। इस महफिल में अपने को पद्मापद्म भाग्यशाली समझते हो? ऐसा श्रेष्ठ भाग्य जो स्वयं ऑलमाइटी अथॉरिटी बाप, बच्चों के इस भाग्य का वर्णन करते हैं। ऐसे भाग्यशाली बच्चों को स्वयं बाप देख हर्षित होते हैं। तो सोचो ऐसा भाग्य क्या होगा? भाग्य को सुमिरण करते ही बाप की सुमरणी के मणके बन सकते हो। इतना ऊँचा भाग्य जिसका आज कलियुग के अन्त में भी सुमिरण करने वाले भक्त अपने को भाग्यशाली समझते हैं। ऐसे श्रेष्ठ भाग्य के अनुभव के अंचली के लिए भी सभी तड़फते हैं। ऐसे भाग्यशाली

हो जिनके नाम से भी अपने जीवन को सफल समझते हैं। तो सोचो वह कितना बड़ा भाग्य है! सदैव अपने को इतना भाग्यशाली आत्मा समझते हो? तो सोचो वह कितना बड़ा भाग्य है!

बड़े से बड़ा ब्राह्मण कुल है, ऐसे ब्राह्मण कुल के भी आप दीपक हो। कुल के दीपक अर्थात् सदा अपनी स्मृति की ज्योति से ब्राह्मण कुल का नाम रोशन करता रहे। ऐसे अपने को कुल के दीपक समझते हो? सदा स्मृति की ज्योति जगी हुई है? बुझ तो नहीं जाती? अखंड ज्योति अर्थात् कभी भी बुझने वाली नहीं। आपके जड़ चित्रों के आगे भी 'अखण्ड ज्योति' जगाते हैं। चैतन्य अखण्ड ज्योति का ही वह यादगार है तो चैतन्य दीपक बुझ सकते हैं? क्या बुझी हुई ज्योति अच्छी लगती है? तो स्वयं को भी चेक करो, जब स्मृति की ज्योति बुझ जाती है तो कैसा लगता होगा? क्या वह अखण्ड ज्योति हुई? ज्योति की निशानी है - सदा स्मृति स्वरूप और समर्थी स्वरूप होगा। स्मृति और समर्थी का सम्बन्ध है। अगर कोई कहे स्मृति तो है कि बाबा का बच्चा हूँ, लेकिन समर्थी नहीं है, यह हो ही नहीं सकता। क्योंकि स्मृति ही है कि 'मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।' मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् समर्थ स्वरूप। समर्थ अर्थात् शक्ति। फिर वह गायब क्यों हो जाती है? कारण? एक शब्द की गलती करते हो। कौन-सी गलती? बाप कहते हैं 'साकारी सो अलंकरी' बनो। लेकिन बन क्या जाते हो? अंलकारी के बजाए देह-अहंकारी बन जाते हैं। बुद्धि के अहंकारी, नाम और शान के अहंकारी

बन जाते हो। सदा सामने अलंकारी स्वरूप का सिम्बल (Symbol;चिन्ह) होते हुए भी अपने अलंकारों को धारण नहीं कर पाते। जैसे हद के राजकुमार और राजकुमारियाँ भी सदा सजे सजाएँ रॉयलिटी (ROYALTY) में होते हैं। वैसे ही ब्राह्मण कुल की श्रेष्ठ आत्माएं सदा अलंकारों से सजे-सजाएं होने चाहिए। यह अलंकार ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार हैं, न कि देवता जीवन का। तो अपने अलंकार के श्रृंगार को सदा कायम रखो। लेकिन करते क्या हो, एक अलंकार को पकड़ते तो दूसरे अलंकार को छोड़ देते हैं। कोई तीन पकड़ सकते हैं तो कोई चार पकड़ सकते हैं। बाप-दादा भी बच्चों का खेल देखते रहते हैं। भुजा अर्थात् शक्ति, जिस शक्ति के आधार से ही अलंकारी बन सकते हैं, वह शक्तियों रूपी भुजायें हिलती रहती हैं। जब भुजाएं हिलती रहती हैं तो सदा अलंकारी कैसे बन सकते हैं? इसलिए कितनी भी कोशिश करते हैं अलंकारी बनने की, लेकिन बन नहीं सकते। तो एक शब्द कौन-सा याद रखना है? किसी भी प्रकार के 'अहंकारी' नहीं लेकिन अलंकारी बनना है। सदा अलंकारी स्वरूप में स्थित न होने के कारण स्वयं का, बाप का साक्षात्कार नहीं करा सकते। इसलिए अपने शक्ति रूपी भुजाओं को मजबूत बनाओ, नहीं तो अलंकारों की धारणा नहीं कर सकेंगे। अलंकारों को तो जानते हो ना? जानते हो और वर्णन भी करते हो फिर भी धारण नहीं कर सकते। क्यों? बाप-दादा बच्चों की कमज़ोरी की लीला बहुत देखते हैं जैसे प्रभु की लीला अपरम्पार है तो बच्चों की भी लीला अपरम्पार है। रोज की नई रंगत होती है। माया के नई रंगत में रंग

जाते हैं। स्वदर्शन चक्र के बजाए व्यर्थ दर्शन का चक्र चल जाता है। द्वापर से जो व्यर्थ कथाएं और व्हानियां बड़ी रूचि से सुनने और सुनाने की आदत है, वह संस्कार अभी भी अंश रूप में आ जाता है। इसलिए कमल पुष्प समान अर्थात् कमल पुष्प के अलंकार धारी नहीं बन सकते। कमल की बजाय कमज़ोर बन जाते हैं। मायाजीत बनने का दूसरों को सन्देश देते, लेकिन स्वयं मायाजीत हैं या नहीं, यह सोचते ही नहीं। इसलिए अलंकारी नहीं बन सकते। अहंकारी।' ऐसे सदा अलंकारी, निरहंकारी, निराकारी स्थिति में स्थित होने वाले, सदा के विजयी, सदा जागते हुए दीपक, विश्व को रोशन करने वाले दीपक, बाप-दादा के नैनों के दीपकों को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दीदी जी के साथ

''नई दुनिया बनाने वालों की, अपने जीवन को नया बनाने की रफ्तार कैसे चल रही है? पहले अपने जीवन में नवीनता लायेंगे तब दुनिया में भी नवीनता आयेगी। तो अपने जीवन रूपी बिल्डिंग (Buidling;इमारत) को सुन्दर और सम्पन्न बनायेंगे, उतना ही नई दुनिया में भी सुन्दर और सम्पन्न राज्य-भाग्य मिलेगा। कर्म द्वारा अपने तकदीर की लकीर खींच रहे हैं। वह है हद की हस्त रेखाएं और ये हैं कर्म की रेखाएं। जितना कर्म श्रेष्ठ और स्पष्ट होगा, उतनी भाग्य की रेखाएं श्रेष्ठ और स्पष्ट होगी। तो

कर्म की रेखाओं से अपना भविष्य खुद ही देख सकते हो। यमुना के किनारे पर कौन रह सकेंगे? जिन्होंने सदा के लिए पुरानी दुनिया से किनारा किया है और बाप को सदा साथी बनाया है, वही यमुना के किनारे साथ महल वाले होंगे। श्री कृष्ण के साथ पढ़ने वाले कौन होंगे? पढ़ने पढ़ाने वाले साथी भी होंगे ना? जिसका सदैव पढ़ाई पढ़ाने और पढ़ने में विशेष पार्ट है वही वहाँ भी विशेष पढ़ाई के साथी बनेंगे। रास करने वाले कौन होंगे? जिन्होंने संगम पर बाप के साथ समान संस्कार मिलाने की रास मिलाई होगी। तो यहाँ जिनके बाप समान संस्कारों के रास मिलती है वे वहाँ रास करेंगे। रॉयल फैमली (ROYAL Family;उच्च परिवार) में कौन आयेंगे? जो सदैव अपनी प्यूरिटी की रॉयलटी में रहते हैं। कहाँ भी हद के आकर्षण में आँख नहीं डूबती। सदा अलंकारों से सजे हुए होते हैं। सदा श्रृंगारे हुए मूर्ति, ऐसी रॉयलटी वाले रॉयल फैमली में आयेंगे। वारिस कौन बनेंगे? वारिस अर्थात् अधिकारी। तो जो यहाँ सदा अधिकारी स्टेज पर रहते, कभी भी माया के अधीन नहीं होते, अधिकारीपन के शुभ नशे में रहते, ऐसे अधिकारी स्टेज वाले ही वहाँ भी अधिकारी बनेंगे। अब हर एक को अपने आप को देखना पड़े कि मैं कौन हूँ? यह पहेली है। किसी-किसी का सारे जीवन में साथ-साथ पार्ट भी है - साथ पढ़ने का, साथ रास करने का, साथ महल में रहने का, रॉयल फैमली में भी साथ होंगे। कुछेक आत्माओं का सर्व अधिकार भी है। यह है नई दुनिया की रूपरेखा।''

टीचर्स के साथ:-

बाप-दादा को विशेष खुशी होती है। क्यों, जानते हो? आप समान शिक्षक हो ना। जैसे बाप विश्व का शिक्षक, सेवक है वैसे टीचर भी शिक्षक और सेवक हैं। तो समानता वालों को देखकर खुशी होती है। शिक्षक की स्थिति में तो समान हो। बिना सेवा के और कोई बात आकर्षित न करे। दिन-रात सेवा में लगी रहो। अगर सेवा से फ्री (Free;खाली) रहेंगे तो फिर और बातें भी आ जायेंगी। खाली घर में ही बिच्छू, टिंडन आते हैं। खाली घर हो या पुराना घर हो। यहाँ भी ऐसे होता है। बुद्धि या तो खाली होती है या तो पुराने संस्कारों वाली होती है, तो व्यर्थ संकल्प रूपी बिच्छू, टिंडन पैदा हो जाते। (1) टीचर अर्थात् सदा बिजी (Busy;व्यस्त) रहने वाली। कभी फुर्सत में रहने वाली नहीं। संकल्प, बोल, कर्म से भी फ्री रहने वाली नहीं।

(2) टीचर का अर्थ ही बाप समान अथवा बाप के समीप विजयी माला के मणके। टीचर का यही लक्ष्य है ना - 'विजयी माला के मणके' बनना।

(3) टीचर अर्थात् कभी हार, कभी जीत में आने वाले नहीं, लेकिन 'सदा विजयी।' (4) टीचर अर्थात् सदा तिलकधारी, सदा सौभाग्यवती, सुहागवती। तिलक सुहाग की निशानी है ना। तो सदा सुहागवती अर्थात् बाप को सदा साथी बनाने वाली। सुहागवती अर्थात् तिलक वाली।

टीचर का स्थान है - दिल-तख्त। स्थान छोड़ेंगे तो दूसरे ले लेंगे। टीचर का आसन बाप का दिल-तख्त है। आसन छोड़ दिया तो त्याग, तपस्या खत्म। तो यह आसन कभी नहीं छोड़ना। जगह लेने वाले बहुत हैं। सभी को यही उमंग उत्साह होता है कि हम टीचर से आगे जायें। टीचर फिर उनसे भी आगे जाए तब तो दिल तख्त नशीन होगी? टीचर का छोटा-सा संसार है ना। टीचर का संसार एक बाप ही है। मात-पिता, बन्धुसखा.। तो संसार में क्या होता है? सर्व सम्बन्ध होता है, वैभव होता है। यहाँ सर्व सम्बन्ध की प्राप्ति बाप से है। है छोटा-सा संसार लेकिन सम्पन्न और शक्तिशाली है। इस छोटे से संसार में कोई अप्राप्त वस्तु नहीं। सर्व सम्बन्ध बाप से। ऐसे नहीं पिता का सम्बन्ध है तो माता का नहीं, माता का है तो बन्धु का नहीं। अगर एक भी सम्बन्ध की प्राप्ति बाप से न होगी तो बुद्धि दूसरे तरफ जरूर जायेगी। बाप से सर्व सम्बन्धों का अनुभव होना चाहिए। नहीं तो दूसरा सम्बन्ध अपनी तरफ खींच लेगा। सारा संसार ही 'एक बाप' हो गया तो सब रूप हो गया ना। इसको कहा जाता है नम्बर वन टीचर। फ्लॉलेस (Flawless;बेदाग) टीचर, योग्य टीचर, नामी-ग्रामी टीचर। बाप तो सदा ऊँची नज़र से देखते हैं। अगर बाप कमी को देखे तो सदा के लिए उस कमी को अन्डर लाईन (Underline) लग जाती है। बाप भाग्य-विधाता है ना। इसलिए बाप सदा श्रेष्ठ नज़र से देखते हैं। श्रेष्ठता के आगे, कमज़ोरी आप ही मन को खाती है। श्रेष्ठ बातें सुनने से कमज़ोरी स्पष्ट हो ही जाती है। इसलिए बाप सदैव श्रेष्ठता का वर्णन करते हैं जिससे

कमज़ोरी स्वत: ही दिखाई दे। अगर कमज़ोरी को देखें तो लम्बी-चौड़ी वेद-शास्त्रों की खानियाँ बन जाएं।

सभी टीचर्स को विशेष एक बात का ध्यान रखना है - कभी भी, किसी में भी रॉयल रूप में भी झुकाव न हो, किसी भी आत्मा के गुणों की तरफ, सेवा, सहयोग की तरफ, बुद्धि की तरफ, प्लानिंग (Planning;योजना) की तरफ झुकाव नहीं हो। उसी को अपना आधार बनाने से झुकाव होता है। जब किसी आत्मा का आधार हो जाता है तो बाप का आधार स्वत: ही निकल जाता है; और अब आगे चलकर अल्प काल का आधार हिल जाता है तो भटक जाते हैं। इसलिए कभी भी किसी आत्मा के किसी विशेष प्रभाव के कारण प्रभावित होना, यह 'महान भूल' है। भूल नहीं महान भूल है। इसमें खुश न हो जाना कि सर्विस वृद्धि को पा रही है। यह अल्प काल का जलवा होता है। फाउन्डेशन (Foundation;नींव) हिला तो सर्विस हिली। इसलिए कभी भी कोई आत्मा को आधार न बनाओ। ऐसे नहीं कि इसके कारण सर्विस वृद्धि को नहीं पायेगी, उन्नति नहीं होगी। यह कारण नहीं कालापन है, जो स्वच्छ आत्मा को काला कर देता है। यह बड़े से बड़ा दाग है। किसी आत्मा को आधार बनाना - यह बड़े ते बड़ा फ्ला है। तो फ्लालेस (Flawless) नहीं बन सकेंगे। बाकी मेहनत बहुत करती हो। मेहनत की बाप-दादा मुबारक देते हैं। सुनाया न कि शास्त्रों की कहानियाँ भी बहुत होती हैं जिनका कोई फाउण्डेशन नहीं। इसलिए पहले सुनाया कि टीचर

अर्थात् सदा सेवा में बिजी। संकल्प में भी बाप के साथ बिजी रहो तो किसी आत्मा में बिजी नहीं होंगे। जो बिजी होता है वह कहाँ झुकेगा नहीं। फ्री होने के बाद ही मनोरंजन के साधन, स्नेह, सहयोग की तरफ झुकाव होता है। जो बिजी होगा, उनको इन बातों के लिए फुर्सत ही नहीं। बाप-दादा टीचर्स को देख खुश होते हैं। हिम्मत, उमंग, उल्लास तो बहुत अच्छा है। कदम आगे बढ़ा रही हो लेकिन अपने कार्यों की कहानी का शास्त्र नहीं बनाना। कर्म की रेखा से श्रेष्ठ तकदीर बनानी है। ऐसी कहानी नहीं बनाना जिसका जन्म भी उल्टा तो कहानी भी उल्टी। स्टुडेंट (Student;जिज्ञासु) को पढ़ाना भी खुद को पढ़ाना है। टीचर्स से रूह-रूहान करना बाप-दादा को भी अच्छा लगता है। फालो करने वाले तथा समान वालों से ज्यादा स्नेह होता है। जिससे स्नेह होता है उसकी छोटी कमज़ोरी भी बड़ी लगती है। इसलिए इशारा देते हैं। हम कितने समीप हैं देखना है। तो अमृतवेले दर्पण स्पष्ट होता है। टीचर्स सैलवेशन (Salvation;सहुलियत) देने वाली बन गई ना, लेने वाली नहीं। टीचर्स से पूछने की आवश्यकता नहीं कि खुश-राज़ी हो। सदा खुश रहो और सेवा में वृद्धि करती रहो। परन्तु जब बाहें लड़खड़ाती हैं तो यह सीन (Scene;दृश्य) भी अच्छा लगता है। एक अलंकार उठाती तो दूसरा छूटता है। कभी स्वदर्शन चक्र को ठीक करती तो शंख छूट जाता है, शंख पकड़ती तो कमल छूट जाता है। अब टीचर्स को शास्त्रों की कथा बन्द करनी है। हर संकल्प, हर सेकेण्ड में तकदीर बनाओ। कोई कथा सुनने वाली, सुनाने वाली और बनाने वाली भी होती है। जैसे व्यास

की कमाल है, वैसे यहाँ भी कमाल करते हैं। जन्म देते, पालना करते परन्तु विनाश नहीं कर पाते। तो फिर पश्चात्ताप करते हैं और कहते हैं मदद करो। अच्छा।

==========

QUIZ QUESTIONS

==========

प्रश्न 1 :- आज बाबा ने बच्चों की महिमा किन किन शब्दों में किया है?

प्रश्न 2 :- ब्राह्मण कुल के दिपक के प्रति आज बाबा ने क्या समझानी दी?

प्रश्न 3 :- बाप कहते हैं 'साकारी सो अलंकरी' बनो। लेकिन बन क्या जाते हो? बाबा की इस महावाक्य को विस्तार कीजिए।

प्रश्न 4 :- बाबा ने टीचर्स को विशेष एक बात को ध्यान रखने को इशारा दिया?

प्रश्न 5 :- कौन रॉयल फैमली में आयेंगे और कौन वारिस बनेंगे?

FILL IN THE BLANKS:-

{ व्यर्थ, कमज़ोरी, प्रभु, द्वापर, साथी, पुरानी, संस्कार, कर्म, श्रेष्ठ, भाग्य, मणके, अपरम्पार, स्पष्ट, यमुना, सुमरणी }

1 बाप-दादा बच्चों की _____ की लीला बहुत देखते हैं जैसे _____ की लीला _____ है तो बच्चों की भी लीला अपरम्पार है।

2 _____ से जो _____ कथाएं और कहानियां बड़ी रूचि से सुनने और सुनाने की आदत है, वह _____ अभी भी अंश रूप में आ जाता है।

3 जिन्होंने सदा के लिए _____ दुनिया से किनारा किया है और बाप को सदा _____ बनाया है, वही _____ के किनारे साथ महल वाले होंगे।

4 जितना _____ _____ और _____ होगा, उतनी भाग्य की रेखाएं श्रेष्ठ और स्पष्ट होगी।

5 _____ को सुमिरण करते ही बाप की _____ के _____ बन सकते हो।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- सदा अलंकारी स्वरूप में स्थित होने के कारण स्वयं का, बाप का साक्षात्कार नहीं करा सकते।

2 :- जिसका सदैव पढ़ाई पढ़ाने और पढ़ने में विशेष पार्ट है वही वहाँ भी विशेष पढ़ाई के साथी बनेंगे।

3 :- टीचर अर्थात् कभी हार, कभी जीत में आने वाले, 'सदा विजयी' नहीं।

4 :- बुद्धि या तो खाली होती है या तो नये संस्कारों वाली होती है, तो व्यर्थ संकल्प रूपी बिच्छू, टिंडन पैदा हो जाते।

5 :- संकल्प में भी बाप के साथ बिजी रहो तो किसी आत्मा में बिजी नहीं होंगे।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- आज बाबा ने बच्चों की महिमा किन किन शब्दों में किया है?

उत्तर 1 :- आज बाबा ने बच्चों की महिमा निम्न शब्दों में किया है -

1. अलंकारी स्थिति में स्थित होने वाले
2. निरहंकारी स्थिति में स्थित होने वाले
3. निराकारी स्थिति में स्थित होने वाले
4. विश्व को रोशन करने वाले दीपक
5. स्नेही

❻ पद्मापद्म भाग्यशाली

❼ कुल के दीपक

❽ बाप की सुमरणी के मणके

❾ सदा जागते हुए दीपक

❿ बाप-दादा के नैनों के दीपक

❶❶ सदा के विजयी

प्रश्न 2 :- ब्राह्मण कुल के दीपक के प्रति आज बाबा ने क्या समझानी दी?

उत्तर 2 :- ब्राह्मण कुल के दिपक के प्रति आज बाबा ने ऐसा समझानी दी की

❶ बड़े से बड़ा ब्राह्मण कुल है, ऐसे ब्राह्मण कुल के भी आप दीपक हो।

❷ कुल के दीपक अर्थात् सदा अपनी स्मृति की ज्योति से ब्राह्मण कुल का नाम रोशन करता रहे।

❸ ऐसे अपने को कुल के दीपक समझते हो?

❹ सदा स्मृति की ज्योति जगी हुई है?

❺ बुझ तो नहीं जाती?

❻ अखंड ज्योति अर्थात् कभी भी बुझने वाली नहीं।

❼ आपके जड़ चित्रों के आगे भी 'अखण्ड ज्योति' जगाते हैं।

❽ चैतन्य अखण्ड ज्योति का ही वह यादगार है तो चैतन्य दीपक बुझ सकते हैं?

❾ क्या बुझी हुई ज्योति अच्छी लगती है?

❿ तो स्वयं को भी चेक करो, जब स्मृति की ज्योति बुझ जाती है तो कैसा लगता होगा? क्या वह अखण्ड ज्योति हुई?

प्रश्न 3 :- बाप कहते हैं 'साकारी सो अलंकरी' बनो। लेकिन बन क्या जाते हो? बाबा की इस महावाक्य को विस्तार कीजिए।

उत्तर 3 :- बाबा कहते है कि -

❶ अंलकारी के बजाए देह-अहंकारी बन जाते हैं।

❷ बुद्धि के अहंकारी, नाम और शान के अहंकारी बन जाते हो।

❸ सदा सामने अलंकारी स्वरूप का सिम्बल (Symbol;चिन्ह) होते हुए भी अपने अलंकारों को धारण नहीं कर पाते।

❹ जैसे हद के राजकुमार और राजकुमारियाँ भी सदा सजे सजाएँ रॉयलिटी (ROYALTY) में होते हैं। वैसे ही ब्राह्मण कुल की श्रेष्ठ आत्माएं सदा अलंकारों से सजे-सजाएं होने चाहिए।

❺ यह अलंकार ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार हैं, न कि देवता जीवन का। तो अपने अलंकार के श्रृंगार को सदा कायम रखो।

❻ लेकिन करते क्या हो, एक अलंकार को पकड़ते तो दूसरे अलंकार को छोड़ देते हैं। कोई तीन पकड़ सकते हैं तो कोई चार पकड़ सकते हैं। बाप-दादा भी बच्चों का खेल देखते रहते हैं।

❼ भुजा अर्थात् शक्ति, जिस शक्ति के आधार से ही अलंकारी बन सकते हैं, वह शक्तियों रूपी भुजायें हिलती रहती हैं।

❽ जब भुजाएं हिलती रहती हैं तो सदा अलंकारी कैसे बन सकते हैं? इसलिए कितनी भी कोशिश करते हैं अलंकारी बनने की, लेकिन बन नहीं सकते।

❾ तो एक शब्द कौन-सा याद रखना है? किसी भी प्रकार के 'अहंकारी' नहीं लेकिन अलंकारी बनना है।

प्रश्न 4 :- बाबा ने टीचर्स को विशेष एक बात को ध्यान रखने को इशारा दिया?

उत्तर 4 :- बाबा कहते है सभी टीचर्स को विशेष एक बात का ध्यान रखना है :-

❶ कभी भी, किसी में भी रॉयल रूप में भी झुकाव न हो, किसी भी आत्मा के गुणों की तरफ, सेवा, सहयोग की तरफ, बुद्धि की तरफ, प्लानिंग (Planning;योजना) की तरफ झुकाव नहीं हो। उसी को अपना आधार बनाने से झुकाव होता है।

❷ जब किसी आत्मा का आधार हो जाता है तो बाप का आधार स्वत: ही निकल जाता है; और अब आगे चलकर अल्प काल का आधार हिल जाता है तो भटक जाते हैं। इसलिए कभी भी किसी आत्मा के किसी विशेष प्रभाव के कारण प्रभावित होना, यह 'महान भूल' है। भूल नहीं महान भूल है।

❸ इसमें खुश न हो जाना कि सर्विस वृद्धि को पा रही है। यह अल्प काल का जलवा होता है।

❹ फाउन्डेशन (Foundation;नींव) हिला तो सर्विस हिली। इसलिए कभी भी कोई आत्मा को आधार न बनाओ।

❺ ऐसे नहीं कि इसके कारण सर्विस वृद्धि को नहीं पायेगी, उन्नति नहीं होगी। यह कारण नहीं कालापन है, जो स्वच्छ आत्मा को काला कर देता है। यह बड़े से बड़ा दाग है।

❻ किसी आत्मा को आधार बनाना - यह बड़े ते बड़ा फ्ला है। तो फ्लालेस (Flawless) नहीं बन सकेंगे।

प्रश्न 5 :- कौन रॉयल फैमली में आयेंगे और कौन वारिस बनेंगे?

उत्तर 5 :- जो सदैव अपनी प्यूरिटी की रॉयलटी में रहते हैं। कहाँ भी हद के आकर्षण में आँख नहीं डूबती। सदा अलंकारों से सजे हुए होते हैं। सदा श्रृंगारे हुए मूर्ति, ऐसी रॉयलटी वाले रॉयल फैमली में आयेंगे।

वारिस अर्थात् अधिकारी। तो जो यहाँ सदा अधिकारी स्टेज पर रहते, कभी भी माया के अधीन नहीं होते, अधिकारीपन के शुभ नशे में रहते, ऐसे अधिकारी स्टेज वाले ही वहाँ भी अधिकारी बनेंगे।

FILL IN THE BLANKS:-

{ व्यर्थ, कमज़ोरी, प्रभु, द्वापर, साथी, पुरानी, संस्कार, कर्म, श्रेष्ठ, भाग्य, मणके, अपरम्पार, स्पष्ट, यमुना, सुमरणी }

1 बाप-दादा बच्चों की _____ की लीला बहुत देखते हैं जैसे _____ की लीला _____ है तो बच्चों की भी लीला अपरम्पार है।

कमज़ोरी / प्रभु / अपरम्पार

2 _____ से जो _____ कथाएं और कहानियां बड़ी रूचि से सुनने और सुनाने की आदत है, वह _____ अभी भी अंश रूप में आ जाता है।

द्वापर / व्यर्थ / संस्कार

3 जिन्होंने सदा के लिए _____ दुनिया से किनारा किया है और बाप को सदा _____ बनाया है, वही _____ के किनारे साथ महल वाले होंगे।

पुरानी / साथी / यमुना

4 जितना _____ _____ और _____ होगा, उतनी भाग्य की रेखाएं श्रेष्ठ और स्पष्ट होगी।

कर्म / श्रेष्ठ / स्पष्ट

5 _____ को सुमिरण करते ही बाप की _____ के _____ बन सकते हो।

भाग्य / सुमरणी / मणके

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✖】 【✔】

1 :- सदा अलंकारी स्वरूप में स्थित होने के कारण स्वयं का, बाप का साक्षात्कार नहीं करा सकते। 【✖】

सदा अलंकारी स्वरूप में स्थित न होने के कारण स्वयं का, बाप का साक्षात्कार नहीं करा सकते।

2 :- जिसका सदैव पढ़ाई पढ़ाने और पढ़ने में विशेष पार्ट है वही वहाँ भी विशेष पढ़ाई के साथी बनेंगे। 【✔】

3 :- टीचर अर्थात् कभी हार, कभी जीत में आने वाले, 'सदा विजयी' नहीं। 【✖】

टीचर अर्थात् कभी हार, कभी जीत में आने वाले नहीं, लेकिन 'सदा विजयी।'

4 :- बुद्धि या तो खाली होती है या तो नये संस्कारों वाली होती है, तो व्यर्थ संकल्प रूपी बिच्छू, टिंडन पैदा हो जाते। 【✖】

बुद्धि या तो खाली होती है या तो पुराने संस्कारों वाली होती है, तो व्यर्थ संकल्प रूपी बिच्छू, टिंडन पैदा हो जाते।

5 :- संकल्प में भी बाप के साथ बिजी रहो तो किसी आत्मा में बिजी नहीं होंगे। 【✔】